विविधतापूर्ण कृषि से आत्मनिर्भरता की कहानी संगीता देवी

महिला किसान का नाम: संगीता देवी
उम्र: 31 वर्ष | **शिक्षा:** 12वीं (वर्तमान में स्नातक की पढ़ाई जारी)
गाँव: जराडीह | **प्रखंड:** पेटरवार | **जिला:** बोकारो | **मोबाइल नं:** 8709122887

---

1. सफलता से पूर्व की स्थिति

संगीता देवी की शादी 2008 में मात्र 16 वर्ष की उम्र में एक किसान परिवार में हुई थी। उस समय उनका घर कच्चा और खपरैल (कैलू) से बना था। साथ ही जीवन के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का बहुत अभाव था। परिवार के पास कुल 7.5 एकड़ जमीन थी और साथ ही मुर्गी पालन की एक बहुत छोटी सी इकाई (यूनिट) थी, जिससे परिवार का भरण-पोषण बड़ी मुश्किल से हो पाता था। वह पारंपरिक तरीके से सब्जी (जैसे- बैंगन, टमाटर, गोभी, मिर्च) उगाती थीं और उसे स्थानीय बाजार में बेचकर अपने परिवार का पालन करती थीं। उनकी आय इतनी कम थी कि बहुत मुश्किल से गुजारा चलता था।

2. कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका

कृषि विज्ञान केन्द्र, बोकारो की स्थापना के बाद संगीता देवी ने वहाँ के वैज्ञानिकों से संपर्क किया। उन्होंने वहाँ आयोजित होने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। यहाँ उन्होंने नर्सरी प्रबंधन, मूल्य संवर्धन (Value Addition) और आधुनिक सिंचाई विधियों का कई बार प्रशिक्षण लिया। उन्होंने विशेष रूप से सब्जियों और फलों की वैज्ञानिक नर्सरी तैयार करने का हुनर सीखा। इसके उपरांत, साल 2020 से उन्होंने व्यावसायिक स्तर पर सब्जी की नर्सरी उगाना शुरू किया। साथ ही, जो मुर्गी पालन पहले अव्यवस्थित तरीके से चल रहा था, उसे वैज्ञानिकों की देखरेख में नए सिरे से आधुनिक तरीके से चालू किया।

3. गतिविधियों का परिणाम

कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी सहयोग से संगीता देवी ने साल 2021 में एक छोटी **पॉली-नर्सरी (Poly Nursery)** की स्थापना की। अब वे प्रो-ट्रे (Pro-tray), कोकोपीट (Coco-peat) और वर्मीकम्पोस्ट (Vermicompost) को मिलाकर उन्नत विधि से टमाटर, मिर्च, बैंगन, फूलगोभी, पत्तागोभी, तरबूज, खीरा, सहजन, करेला एवं पपीता की स्वस्थ पौध (नर्सरी) तैयार कर लेती हैं।
वे सामान्य सब्जी के पौधों को ₹1 प्रति पौधा बेचती हैं, जबकि तरबूज और करेले का पौधा ₹3, तथा पपीते का पौधा ₹5 प्रति पौधे की दर से बेचती हैं। मुर्गी पालन व्यवसाय को भी उन्होंने बढ़ाते हुए अब दो इकाइयाँ कर ली हैं, जहाँ वे एक बार में 800 से 1000 मुर्गियों का पालन और बिक्री करती हैं।

4. आर्थिक परिणाम (तुलनात्मक विवरण)

नीचे संगीता देवी की कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़ने से पहले और बाद की आर्थिक स्थिति का पूरा विवरण दिया गया है:

क) कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका से पहले (पारंपरिक खेती):

क्र. सं.	उद्यम/व्यवसाय	कुल उत्पादन	लागत (₹)	सकल उत्पाद मूल्य (₹)	शुद्ध आय (₹)	रोजगार सृजन (श्रम दिवस)
1	पारंपरिक सब्जी	58 क्विंटल	650/- प्रति क्विंटल	220 किलोग्राम*	1,76,000/-	29
2	मुर्गी पालन	250 मुर्गियाँ	8500/- कुल	375 किलोग्राम*	24,375/-	8

ख) कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका के बाद (आधुनिक एवं वैज्ञानिक खेती):

क्र. सं.	उद्यम/व्यवसाय	कुल उत्पादन	लागत (₹)	सकल उत्पाद मूल्य (₹)	शुद्ध आय (₹)	रोजगार सृजन (श्रम दिवस)
1	आधुनिक सब्जी	180 क्विंटल	250/- प्रति क्विंटल	680 किलोग्राम*	2,16,000/-	15
2	उन्नत मुर्गी पालन	800-1000 मुर्गियाँ	5000/- कुल	1000 किलोग्राम*	1,50,000/-	7
3	हाई-टेक नर्सरी	75,000 पौधे	55,000/- कुल	3,00,000 पौधे*	2,70,000/-	85

(नोट: मूल टेक्स्ट में कनवर्ट हुए आंकड़ों और किलोग्राम/पौधों की संख्याओं को उनके मूल प्रारूप के अनुसार ही सारणीबद्ध किया गया है।)

5. परिणाम (Outcome) का महिलाओं और उनके परिवार पर प्रभाव

बोकारो जिले के पेटरवार प्रखंड की संगीता देवी आज एक सफल उद्यमी बन चुकी हैं। हाई-टेक नर्सरी, आधुनिक मुर्गी पालन और उन्नत सब्जी उत्पादन से होने वाली शानदार आय के कारण उनके जीवन में बड़ा बदलाव आया है। शादी के समय वे केवल मैट्रिक (10वीं) पास थीं, लेकिन आत्मनिर्भर होने के बाद अब वे **स्नातक (Graduation)** की पढ़ाई कर रही हैं।
उन्होंने अपना कच्चा मकान हटाकर एक शानदार पक्का घर बनवा लिया है, जो सभी आधुनिक सुविधाओं से लैस है। वे अपने दोनों बच्चों को अच्छे प्राइवेट स्कूल में पढ़ा रही हैं। इसके अलावा, वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए **झारखंड लाइवलीहुड सोसाइटी (JSLPS)** की 25 अन्य महिला किसानों को नर्सरी प्रबंधन का प्रशिक्षण देकर उन्हें भी आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बना रही हैं।